International Journal of Jyotish Research: 2020; 5(1): 46-50

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2020; 5(1): 46-50
© 2020 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 14-05-2020
Accepted: 22-06-2020

अजय कुमार मित्तल
एम0 एस0 सी0 (भौतिक विज्ञान), एम0 ए0 (गणित), बी0 एड0, ज्योतिष शास्त्री, श्री महर्षि कॉलिज ऑफ वैदिक एस्ट्रोलॉजी, उदयपुर, राजस्थान, प्रवक्ता भौतिक विज्ञान, एस0 एस0 के0 इण्टर कॉलिज, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अजय कुमार मित्तल
एम0 एस0 सी0 (भौतिक विज्ञान), एम0 ए0 (गणित), बी0 एड0, ज्योतिष शास्त्री, श्री महर्षि कॉलिज ऑफ वैदिक एस्ट्रोलॉजी, उदयपुर, राजस्थान, प्रवक्ता भौतिक विज्ञान, एस0 एस0 के0 इण्टर कॉलिज, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

नाम या जन्म–नामाक्षर महत्ता का विश्लेषण

अजय कुमार मित्तल

प्रस्तावना
किसी जातक के जीवन में अनेक ऐसे शुभ अवसर आते हैं जिनमें उसे अपना कोई कार्य प्रारम्भ करने के लिये एक शुभ मूहूर्त जानने की जिज्ञासा होती है। इसके समाधान के लिये सामान्यतः उसकी चन्द्र राशि महत्वपूर्ण होती है जिसे जातक की जन्म राशि भी कहते हैं। वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करते समय भी वर–वधू की चन्द्र–राशि के आधार पर ही शुभ मुहूर्त का विचार किया जाता है। किसी जातक की चन्द्र–राशि जानने के लिये उसकी जन्म पत्रिका ही महत्वपूर्ण होती है क्योंकि उस पत्रिका से जातक के जन्म के समय का नक्षत्र, उसका चरण और उस आधार पर जातक की जन्म–राशि का ज्ञान सरलता से हो जाता है। पत्रिका के द्वादश भावों पर एक दृष्टि डालने मात्र से ही चन्द्रमा की स्थिति के आधार पर जातक की जन्म राशि तुरन्त ही ज्ञात हो जाती है। और फिर, इसके बाद शुभ मुहूर्त ज्ञात करने पर विचार प्रारम्भ हो जाता है। एक संस्कारकर्ता के लिये यह एक सामान्य प्रक्रिया है।

जन्म राशि के आधार पर ही किसी जातक का नाम निर्धारित होता है लेकिन सामान्यतः देखने में यह भी मिलता है कि लोग विपरीत क्रिया अपनाते हुए अपने नाम के आधार पर ही राशि ढूँढते हैं और मनवांछित फल की कामना करते हैं।

जन्म राशि से नाम और नाम से जन्म राशि, ये दो परस्पर विपरीत क्रियायें हैं तो प्रश्नकर्ता के मुहूर्त या अन्य किसी समाधान के समय यह प्रारम्भिक जानकारी कहाँ तक उचित है या अनुचित है, विचारणीय तो है। जब राशियों के अन्तर्गत नक्षत्र और उनके चरणों पर भी विचार आवश्यक होता है तो यहाँ एक विशुद्ध समाधान और भी आवश्यक हो जाता है। आईए, ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार करें।

मुहूर्त जानते समय सम्भावित त्रुटि का आधार
वैसे तो मुहूर्त ज्ञात करते समय जातक की जन्म–राशि के अतिरिक्त कुछ अन्य बिन्दुओं पर भी विचार होता है लेकिन यहाँ पर हम केवल चन्द्र–राशि (जन्म–राशि) से जुड़ी कुछ मानवीय त्रुटियों के बारे में विचार करेंगे जो जातक अथवा संस्कारकर्ता अथवा कभी कभी दोनों के द्वारा जाने–अनजाने, अज्ञानतावश या स्वार्थवश स्वतः समावेशित होती जाती हैं और इन त्रुटियों की सूक्ष्मता व जीवन पर उनके शुभाशुभ प्रभाव की गहराई पर ध्यान न देने के कारण समय के साथ फलित में अन्तर का अनुभव होने लगता है। इन्हीं त्रुटियों की ओर ध्यान आकर्षित करने लिये यह लेख प्रस्तुत किया जा रहा है। अब, क्योंकि जातक की जन्म–राशि के आधार पर ही जातक का नाम निर्धारित होता है, इसलिये आगे हम जातक के नाम और उससे जुड़ी कुछ मानवीय त्रुटियों पर आवश्यक ध्यान देने और उससे जुड़े समाधान के बारे में जानेंगे।

एक जातक के दो नाम
एक व्यक्ति के परिचय में उसका 'नाम' सदैव मुख्य होता है। (1) ज्योतिष विज्ञान की दृष्टि से उसके जन्म का दिनांक, जन्म का समय और जन्म का स्थान, ये तीन प्रमुख मान होते हैं जिनके द्वारा जातक की पूरी जन्म कुण्डली ज्ञात हो जाती हैं। फिर, जातक के जन्म के समय हिन्दू पंचांग के आधार पर संस्कारकर्ता द्वारा उसके माता–पिता को एक 'जन्म नामाक्षर' सुझाया जाता है जो कि हिन्दी वर्णमाला के 36 अक्षरों में से कोई एक बिना मात्रा या मात्रा से युक्त एक पूर्णाक्षर होता है। उस नामाक्षर को प्रथम स्थान पर रखते हुए जातक को एक शुभनाम प्रदान किया जाता है। इसे जातक का 'जन्म–नाम' कहते हैं।

(2) कभी कभी सुझाये गये इन अक्षरों में से अधिकतर अक्षरों से सम्बन्धित 'नाम' जातक के माता–पिता को मनमोहक या आकर्षक नहीं लगते, जैसे– 'भो' से भोजराज, 'गी' से गिरधारी आदि। ऐसे नाम जातक के माता–पिता को आज के सामाजिक परिवेश में आधुनिक नामों के अनुकूल भी नहीं

लगते। आज के प्रगतिशील युग में देखने को यह भी मिलता है कि माता पिता अपने बालक का नाम जन्म के समय सुझाये गये नामाक्षर पर न रखकर सामाजिक दृष्टि से बालक की विशिष्ट पहचान बनाने के साथ साथ अपनी आत्म संतुष्टि और मन के प्रसन्न भावानुसार कुछ अलग रख लेते हैं। उनका ऐसा करना गलत भी नहीं कहा जा सकता। इसलिये वे संस्कारकर्ता द्वारा सुझाये गये जन्म नामाक्षर से जुड़े नाम के अतिरिक्त अपनी पसन्द का एक अन्य नाम भी रख लेते हैं। जैसे, 'गी' नामाक्षर से रखे गये जन्म–नाम 'गिरधारी' के साथ उसका एक अन्य नाम 'पंकज'। इस स्थिति में जातक के दो नाम हो जाते हैं, एक तो वह नाम जो संस्कारकर्ता द्वारा जातक के जन्म के समय पंचांगानुसार सुझाये गये नामाक्षर पर रखा गया होता है और दूसरा वह जो माता पिता के द्वारा स्वेच्छा से रखा गया होता है जो कि समय के अनुसार अधिक प्रचलित और प्रसिद्ध होता जाता है। इसे जातक का 'बोलता नाम'' कहते हैं।

सामान्यतः, इस स्थिति में जातक का पहला नाम (जन्म–नाम) केवल जन्म के समय ही उसकी पत्रिका में अंकित होकर रह जाता है जिसका कि दैनिक जीवन में तो कोई उपयोग नहीं होता, लेकिन यदा कदा कुछ मुहूर्तों व महत्वपूर्ण प्रश्न समाधान के अवसर पर ही उसका तात्कालिक महत्व होता है, और इस प्रकार जन्म का नाम कुछ विशेष अवसरों के लिये ही जातक के जीवन से सम्बन्धित रह जाता है। वहीं दूसरी ओर, जातक का दूसरा नाम अर्थात बोलता–नाम (यदि जन्म–नाम से भिन्न है) जातक के जीवन में सदैव प्रचलन में रहने के कारण सामाजिक व्यवस्था में आत्मसात होता जाता है और जातक के जीवन में उसकी एक विशिष्ट पहचान को स्थापित करता है, और इसलिये समयानुसार वह नाम जातक के दृयिटकोण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता जाता है। सामान्यतः तो जातक या उसके माता–पिता को याद भी नहीं रहता कि जातक का जन्म–नाम क्या है, जबकि वास्तविकता यह है कि बोलते–नाम के साथ साथ जातक के जन्म–नाम का अपना विशेष महत्व होता है।

अनेक शुभ अवसरों पर ही एक जन सामान्य के मन में प्रश्न जाग्रत होता है कि दोनों नामों में से जातक का कौन सा नाम अधिक महत्वपूर्ण होता है–उसका जन्म–नाम या बोलता–नाम।

जातक के नाम के साथ जुड़ी सम्भावित मानवीय त्रुटियाँ

सामान्यतः किसी जातक से सम्बन्धित शुभ मुहूर्त ज्ञात करते समय समाधानकर्ता द्वारा पूछे गये नाम या जातक द्वारा बताये गये नाम के आधार पर तुरन्त निर्णय पर पहुँचने की शीघ्रता अनायास ही कुछ गम्भीर त्रुटियों के समावेशित होने का कारण बन जाती हैं। इसके पीछे अनेक कारण नीहित हो सकते हैं, जैसे कि–जातक की अज्ञानता, जातक का उतावलापन, उसकी जिद, अतिव्यस्तता के कारण उसके पास समय का अभाव या संस्कारकर्ता की औपचारिकता, अतिव्यस्तता के कारण उसका स्वार्थ, विषय के प्रति समर्पण और गम्भीरता का अभाव और कभी कभी विषयगत अज्ञानता या अति ज्ञानी होने का भाव, आदि। इन त्रुटियों के कारण जातक का जन्म–नाम भी उसकी सही जन्म–राशि को प्रदर्शित न करने के कारण अशुद्ध बन जाता है। आईये, ऐसी ही सम्भावित त्रुटियों की और देखने और उन्हें समझने का प्रयास करते हैं।

इसके लिये, आईये, पहले हम जातक के नामकरण के लिये ज्योतिष विज्ञान में राशि और उनके अन्तर्गत विभिन्न नक्षत्रों व उनके चरणों के अनुसार निर्धारित एक कूट–अक्षर व्यवस्था को समझते हैं।

जन्म–नाम हेतु कूट–अक्षर व्यवस्था

पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा करते हुए चन्द्रमा पृथ्वी के सापेक्ष आकाश में 360^0 पर स्थित 12 राशियों में व्यवस्थित सभी 27 नक्षत्रों (28वाँ अभिजीत नक्षत्र इन्हीं के मध्य में ही स्थित होता है) में से क्रमशः होकर गुजरता है। सामान्यतः इन नक्षत्रों का आकाश में फैलाव एक समान नहीं होता, लेकिन औसत रूप में बाँटने पर चन्द्रमा प्रत्येक नक्षत्र पर 13^0 20 ($360^0 \div 27$त्र 13^0 20′) तक रहता हुआ परिक्रमण गति की पुनरावृत्ति करता रहता है। प्रत्येक नक्षत्र के चार भाग, जिन्हें हम नक्षत्र–चरण' भी कहते हैं, करने पर आकाश के चक्र के कुल 27ग4त्र108 भागों (चरणों) में से प्रत्येक चरण में चन्द्रमा $360^0 \div 108$ या 13^0 20′÷4त्र 3^0 20′ अंश तक रहकर अविरत गति करता है।

इस गणित को आधार मानकर कूट–अक्षर की व्यवस्था के क्रम में हिन्दी वर्णमाला के निम्नलिखित 36 अक्षर सम्मिलित किये गये हैं–

1. अवर्ग – अ, इ, उ, ए, ओ (5 अक्षर)
2. कवर्ग – क, ख, ग, घ,ड. (5 अक्षर)
3. चवर्ग – च, छ, ज, झ, ञ (5 अक्षर)
4. टवर्ग – ट, ठ, ड, ढ,ण (5 अक्षर)
5. तवर्ग – त, थ, द, ध, न, (5 अक्षर)
6. पवर्ग – प, फ, भ, म, (ब छोड़कर 4 अक्षर)
7. यवर्ग – य, र, ल, व, (4 अक्षर)
8. सवर्ग – स, ष, ह (श छोड़कर 3 अक्षर)

इनमें से कुछ को बिना मात्रा के और शेष को मात्रा के साथ लेते हुऐ खगोलीय चन्द्र कान्ति वृत में स्थित (चन्द्रमा के गमन पथ के अनुदिश) 27 नक्षत्रों के चार चरण प्रति नक्षत्र के आधार पर 108 चरणों के साथ उन्हीं के मध्य एक अभिजीत नक्षत्र के भी चार चरण सम्मिलित करते हुए कुल 112 चरणों की निम्नलिखत एक कूट–चक्र व्यवस्था [1] निर्धारित हैं–

इस कूट चक्र में मकर राशि को छोड़कर शेष 11 राशियों में 9 कूट–अक्षर तथा केवल मकर राशि में 13 कूट–अक्षर (कुल 11ग91ग13 त्र112 अक्षर) निर्धारित हैं। जातक के नामकरण के समय इन्हीं 112 अक्षरों में से किसी एक नामाक्षर से आरम्भ करके ही किसी जातक का जन्म–नाम रखा जाता है। इसलिये जब जब चन्द्रमा की आकाशीय स्थिति इन 112 चरणों में से किसी एक चरण में होती है तो कूट–अक्षर चक्र में उस चरण को दिये गये कूट–अक्षर से ही जातक के जन्म नक्षत्र और उसकी ''शुद्ध राशि'' का ज्ञान हो जाता है। शुभ मुहूर्त जैसे प्रश्न समाधान ज्ञात करते समय जातक का जन्म–नक्षत्र ज्ञात होने पर उसकी पत्रिका देखने की भी आवश्यक्ता नहीं होती।

यहाँ, उक्त वाक्य में मेरे द्वारा ''शुद्ध राशि'' कथन में छुपे तथ्यों के विश्लेषण में ही प्रश्नगत समाधान नीहित है। इस समाधान के लिये आईये, जातक के जन्म नाम और उसके बोलते नाम से जुड़ी तथा सामान्य व्यवहार में सम्मिलित कुछ मानवीय त्रुटियों और उनके सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्यों को समझते हैं–

जन्म–नाम के सम्बन्ध में त्रुटियाँ

किसी जातक के जन्म के समय चन्द्रमा की स्थिति उस पर सीधे प्रभावकारी होती है जिससे जातक की जन्म राशि, जन्म नक्षत्र आदि के आधार पर उसके स्वभाव और प्रकृति आदि का ज्ञान होता है। जन्म राशि के आधार पर जातक का जन्म–नाम निर्धारित होता है। आईये, जातक की शुद्ध या अशुद्ध राशि कहने के भाव मे नीहित जातक के जन्म नाम और उसकी राशि के निर्धारण के समय होने वाली सम्भावित त्रुटियों को कुछ उदाहरणों के साथ जानते हैं–

(क) कूट चक्र में सम्मिलित हिन्दी वर्णमाला के 36 अक्षरों में से 3 अक्षर ऐसे भी हैं जिनका प्रयोग करके किसी जातक का नाम रखना कठिन या अव्यवहारिक होता है, जैसे कि ङ•,ण और ञ,। नामाक्षर निर्धारित करते समय ये तीन अक्षर आने पर संस्कारकर्ता जातक के माता पिता को उनकी सुविधा की दृष्टि से या तो इन अक्षरों से सम्बन्धित नक्षत्र के किसी अन्य चरण का कूट–अक्षर या यदि वह अक्षर भी अव्यवहारिक लगे तो उस से सम्बन्धित राशि के अन्य किसी सरल कूट–अक्षर से जातक का नाम रखने का सुझाव दे

देते हैं। स्वयं की अज्ञानतावश् और समाधानकर्ता पर पूर्णतः आश्रित और विश्वस्त जातक या उसके माता–पिता उस सुझाव को बिना किसी तर्क के सहजता से स्वीकार भी कर लेते हैं।

अब इस बात को ऐसे समझिये कि, किसी दिन उत्तर भाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्में किसी बालक का कूट–अक्षर चक्रानुसार जन्म–नामाक्षर ''ञ'' होगा तथा उसकी राशि 'मीन' होगी। अक्षर 'ञ' से जातक का नामकरण कठिन, अव्यवहारिक है या यूँ कहें कि असम्भव सा ही है। अब, यदि समाधानकर्ता जातक के माता–पिता को इस अक्षर 'ञ' के स्थान पर उत्तर भाद्रपद नक्षत्र के अन्य तीन चरणों के संगत 'दू', 'थ', या 'झ' अक्षरों में से कोई एक अक्षर सुझाये तो भी जातक के जन्म–नाम का निर्धारण कठिन सा ही प्रतीत होगा। इसके समाधान के लिये सामान्य व्यवहार में एक संस्कारकर्ता द्वारा जातक की मीन राशि के सभी 9 कूट–अक्षरों में से कोई भी एक अक्षर 'दी', 'दू', 'दे', 'दो', 'चा' या 'ची' को लेकर नामकरण का सुझाव दे दिया जाता है। अब, यहाँ तक तो संस्कारकर्ता द्वारा किये गये समाधान के अन्तर्गत भविष्य में किसी शुभ अवसर पर किसी संस्कार निर्धारण के समय जातक के द्वारा अपना जन्म–नाम बताने पर जन्म–नाम के आधार पर उसकी जन्म–राशि में तो कोई परिवर्तन नहीं आयेगा लेकिन रखे गये नाम के प्रथमाक्षर से सम्बन्धित नक्षत्र एवं उसके चरण में भिन्नता के कारण फलित अवश्य प्रभावित हो जायेगा।

इस स्थिति में यदि वह संस्कारकर्ता जातक के जन्म नाम के लिये नामाक्षर के निर्धारण के समय माता–पिता की समस्या को और अधिक सरल बनाने के नाम पर केवल ये सुझाव दे दे कि वो जातक का नाम 'द' या 'च' अक्षर से रख सकता है, तो माता पिता के द्वारा 'दा' अक्षर से रखे गये ''दारा सिंह'' जैसे जन्म–नाम के बालक की राशि कुम्भ और 'चे' अक्षर से रखे गये ''चेतन'' जैसे जन्म–नाम के बालक की राशि मेष बन जायेगी। भविष्य में बिना पत्रिका दिखाये जन्म–नाम के नाम पर इन नामों को बताने पर समझा जा सकता है कि उस जातक की शुद्ध जन्म राशि 'मीन' होते हुए भी 'कुम्भ' या 'मेष' के रूप में अशुद्ध ग्रहण की जायेगी और संस्कारकर्ता का जातक के माता पिता को नामकरण के लिये दिया गया यही अशुद्ध सुझाव जातक के जीवन में गलत फलित का कारण बन जायेगा। जातक के जीवन में घटित तो कुछ और होगा और अशुद्ध जन्म–नाम के अनुसार दिखाई कुछ और देगा। स्पष्ट है कि अधूरे और अशुद्ध दिशा–निर्देशों से जातक का जन्म–नाम भी अशुद्ध सिद्ध हो सकता है।

(ख) कभी कभी जल्दबाजी में संस्कारकर्ता जातक का जन्म–नामाक्षर उस नक्षत्र के विशेष चरण से जुड़ा अक्षर न बताकर उसी राशि के किसी अन्य अक्षर को लेकर भी सुझा देते हैं जबकि वह अक्षर होता तो उसी राशि का है लेकिन नक्षत्र और उसका चरण बदल चुका होता है।

जैसे, यदि किसी जातक का जन्म विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हो तो उसका जन्म नामाक्षर 'तो' को देखकर समाधानकर्ता बड़े ही सरल भाव से जातक या उसके माता–पिता को अपने जातक का नाम 'त' अक्षर से रखने की सलाह दे देता है। वास्तव में 'त' अक्षर से कोई जन्म–नाम सुझाया ही नहीं जा सकता क्योंकि नामकरण की कूट–व्यवस्था (कूट–अक्षर चक्र) में त अक्षर सम्मिलित ही नहीं है, क्योंकि कूट–अक्षर चक्र में 17 स्वतन्त्र अक्षरों के रूप केवल 5 स्वर–अक्षर 'अ', 'इ', 'उ', 'ए', 'ओ' और 12 व्यंजन अक्षरों–'ड•', 'ञ', 'ण', 'घ', 'छ', 'झ', 'ठ', 'ढ', 'फ', 'थ', 'ध' और 'ष' हैं। शेष 95 अक्षर इन पाँचों स्वरों से जुड़कर कूट अक्षर के रूप में प्रयुक्त किये गये हैं। अतः, तनवीर, तरूण आदि जैसे नाम कूट चक्र के द्वारा सुझाये गये नाम नहीं हो सकते। अब यदि माता पिता संस्कारकर्ता पर विश्वास करके अपने जातक का नाम 'त' या 'ता' से रख लें तो वह नाम शुभ अवसरों पर आवश्यक्ता के समय स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण को प्रदर्शित करेगा। इस दशा में जन्म का नाम भी जन्म–नामाक्षर से अलग होगा। इस स्थिति में जातक की जन्म–राशि तुला मानी जायेगी जबकि 'तो' अक्षर के आधार पर वह जन्म के समय वृश्चिक थी। स्पष्ट है कि इस तरह से अज्ञानतावश ज्योतिर्विज्ञान का फलित गलत होने लगेगा और जातक की वृश्चिक के रूप में शुद्ध राशि तुला के रूप में एक अशुद्ध रूप ले लेगी।

(ग) कूट–चक्र से यह स्पष्ट है कि एक जैसी ध्वनि से जुड़े दो भिन्न कूट अक्षर भिन्न–भिन्न राशियों को व्यक्त कर सकते हैं। जैसे कि, ''टा'' और ''टो'' नामाक्षर एक ही वर्ग 'टवर्ग' के अक्षर 'ट' की दो अलग अलग मात्राओं से जुड़ कर बने हैं। दोनों में 'ट' अक्षर की प्रारम्भिक ध्वनि दोनों को एक ही राशि के कूट अक्षर के रूप में प्रदर्शित करती हुई प्रतीत होती है। लेकिन यहाँ यह जानना अति आवश्यक है कि नामाक्षर 'टा' सिंह राशि का एक कूट–अक्षर है जबकि 'टो' कन्या राशि का। अर्थात, जन्म–नाम 'टाटा' वाले किसी जातक की राशि 'सिंह' होगी जबकि जन्म–नाम 'टोनी' वाले किसी जातक की राशि 'कन्या' होगी। ऐसा इसलिये है, क्योंकि नामाक्षर 'टा' पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण का कूट–अक्षर है जो कि सिंह राशि में स्थित है जबकि नामामक्षर ''टो'' उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण का कूट–अक्षर है जो कि कन्या राशि में स्थित है। सामान्यतः 'टा', 'टी', टू', 'टे' और 'टो' नामाक्षर वाले व्यक्ति अपने को एक ही जैसे नक्षत्र और राशि का मानकर तुलना करने लगते हैं जो कि नितांत गलत हैं। अंग्रेजी वर्तनी में तो इन सभी नामाक्षरों से बने सभी नामों का पहला अंग्रेजी अक्षर (T) समान ही होता है जिससे इस भ्रम की स्थिति और अधिक सुदृढ हो जाती है। इस प्रकार नक्षत्र चरणों की भिन्नता जातक से जुड़े फलित में दिखाई देने लगती है जो एक सामान्य जन को ज्योतिर्विज्ञान से खिन्न करती है।

(घ) एक अन्य उदाहरण से समझते हैं कि यदि कोई जातक अपना जन्म–नाम 'गणेश' बताकर अपने जीवन में किसी शुभ कार्य का मुहूर्त या अपने वैवाहिक सम्बन्ध हेतु समाधान का प्रश्न करे तो उस जातक की कौन सी राशि या नक्षत्र के आधार पर समाधान प्रस्तुत किया जायेगा।

यहाँ, गणेश नाम का प्रथम नामाक्षर 'ग' है जो कि उपरोक्त कूट–चक्र में नहीं है बल्कि चक्र में तो अक्षर 'ग' के साथ पाँच मात्राओं से जुड़े नामाक्षर 'गा', 'गी', 'गू', 'गे' और 'गो' हैं। कूट–चक्र से जानने पर ज्ञात होगा कि नामाक्षर 'गा' और 'गी' धनिष्ठा नक्षत्र के पहले और दूसरे चरण के कूट–अक्षर हैं जो कि 'मकर राशि' के अन्तर्गत हैं, जबकि नामाक्षर 'गू' और 'गे' धनिष्ठा नक्षत्र के तीसरे और चौथे चरण के अक्षर हैं जोकि 'कुम्भ राशि' में हैं। पाँचवाँ नामाक्षर 'गो' शतभिषा नक्षत्र के प्रथम चरण का कूट–अक्षर है जिसकी राशि भी 'कुम्भ' ही है। स्पष्ट है कि 'गणेश' जन्म–नाम वाले व्यक्ति की दो जन्म–राशि, दो जन्म–नक्षत्र और पाँच नक्षत्र–चरण प्रदर्शित हो सकते हैं। इस उदाहरण से स्पष्ट समझा जा सकता है कि उस जातक के प्रति समाधान करना कितना भ्रामक रहेगा।

बोलते (प्रचलित) नाम के सम्बन्ध में त्रुटियाँ

जब जातक के जन्म–नाम से अलग उसका दूसरा नाम बोलते नाम के रूप में अधिक प्रचलित, परिचित एवं प्रसिद्ध हो जाता है तो यदा कदा आवश्यकता पड़ने पर वह अपने जीवन से जुड़ी कुछ विशिष्ट घटनाओं का तुरन्त कारण जानने या उसके जीवन से जुड़ी आगामी शुभाशुभ घटनाओं की जानकारी जानने की तुरन्त जिज्ञासा शान्ति हेतु अखबार या पत्रिकाओं में प्रकाशित राशि फल या टेलीविजन पर किसी ज्योतिष विशेषज्ञ द्वारा घोषित की जा रही सामान्य भविष्यवाणी आदि की ओ आकर्षित होते हुए अपने बोलते नाम के प्रथमाक्षर के आधार पर ही एक निर्णय या फल को स्वयं से सम्बन्धित मानकर उससे प्रभावित हो जाता है जो वास्तव में उससे सम्बन्धित होता ही नहीं।

इसी प्रकार, अधिकतर लोगों को अपनी जन्म राशि या जन्म नक्षत्र आदि का ज्ञान या उसकी जानकारी तो होती नही। वे ज्योतिष विज्ञान पर ही विश्वास नहीं करते और इसलिये अपनी जन्म

कुण्डली भी नहीं रखते लेकिन अखबार का राशि फल वाला पृष्ठ आँखों के सामने आते ही या टेलीविजन पर या सोशल मीडिया पर राशि फल की जानकारी देखते या सुनते ही उन्हें भी अपने गोचर या भविष्य फल जानने की उत्सुकता होती है और इसलिये वे जाने अनजाने अपने अशुद्ध नामाक्षर के आधार पर निर्धारित अशुद्ध राशि का फल जानकर अपने मन में उससे सम्बन्धित शुभाशुभ भाव उत्पन्न कर लेते हैं। यदि फल अनूकूल हो तो उन्हें सुकून देता है और इस विज्ञान के प्रति एक विश्वास पैदा करता है। वहीं दूसरी और, इसके विपरीत वास्तविक घटनाओं से उनका फल मेल होता हुआ न दिखने पर वह क्षण उन्हें इस विज्ञान से दूर करता है। अज्ञानता या गलत आंकड़ों के चयन का आधार जैसे यही वे कारण हैं जिनके कारण ज्योतिष विज्ञान को अपनी सार्थकता की पुष्टि के लिये जूझना पड़ता है।

आईये कुछ उदाहरण के माध्यम से इसे समझते हैं–

(क) स्वेच्छिक नामकरण के प्रचलन में समाज में कुछ जातकों का नाम 'ब' नामाक्षर से भी देखने या सुनने को मिलता है। अब, विचारणीय बिन्दु यह है कि अक्षर 'ब' इस कूट–अक्षर चक्र में सम्मिलित ही नहीं है। इसलिये बाबूराम, बबीता, बालकिशन, बाला आदि नाम वाले व्यक्तियों की तो 12 में से कोई राशि ढूँढने से भी नहीं मिलेगी। तो क्या ये सभी नाम गलत है? नहीं। यहाँ स्पष्ट है कि इन व्यक्तियों का नाम उनका जन्म का नाम तो हो ही नहीं सकता क्योंकि नाम का प्रारम्भिक अक्षर 'ब' इस कूट–अक्षर चक्र में नहीं है। तो फिर ये उनका बोलता–नाम हुआ। इस स्थिति में जातक का बोलता–नाम तो महत्वपूर्ण हो नहीं सकता। निश्चित ही यहाँ पर उनकी राशि अक्षर ''व'' के अनुकूल मानते हुए वृषभ घोषित कर दी जाती है। अर्थात, जातक की पत्रिका से सम्बन्धित सभी फलित वृषभ राशि के अनुसार ही घोषित किये जायेंगे जो कि न्यायसंगत नहीं होंगे।

यदि अक्षर 'व' और 'ब' की समानता की बात करें तो तो पहली बात तो ये कि हर अक्षर एक दूसरे से पूर्णतः भिन्न होता है और दूसरी बात ये कि अक्षर 'व' वर्णमाला के 'यवर्ग' का सदस्य है जबकि अक्षर 'ब' वर्णमाला के 'पवर्ग' का सदस्य है। यदि नामाक्षर 'वा', 'वी' या 'वू' है तो ये नामाक्षर रोहिणी नक्षत्र के हैं और यदि 'वे' या 'वो' है तो ये मृगशिरा नक्षत्र के हैं। इसलिये किसी भी स्थिति में इन दोनों या किन्हीं भी दो अक्षरों के मध्य समानता तर्कसंगत नहीं है।

ऐसी ही समस्या एक अन्य नामाक्षर 'श' से प्रारम्भ होने वाले नाम के साथ होती है। अक्षर 'श' कूट–अक्षर चक्र में सम्मिलित नहीं होने के कारण 'श' अक्षर को 'स' के तुल्य या समध्वनि कहकर जातक की राशि कुम्भ घोषित कर दी जाती है जो कि कूट–अक्षर चक्र के अनुसार न्यायसंगत नहीं है।

(ख) कुछ व्यक्तियों के बोलचाल के नाम आधे अक्षर से प्रारम्भ होते हैं। जैसे–प्रवीण, स्वाति, द्वारिका, श्वेता, प्रताप आदि। अब, 'प्रवीण' नाम को ही लें। प्रवीण शब्द में प्रारम्भिक अक्षर 'प' आधा है तथा पहला पूरा अक्षर 'र' है। कूट–चक्र में इनमें से कोई भी अक्षर नहीं है। इस आधार पर यह जन्म नामाक्षर के आधार पर किसी जातक का जन्म नाम नहीं हो सकता। अब, यदि संस्कारकर्ता ने उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्मे जातक का नामाक्षर 'पा' सुझाया हो या कन्या राशि के 'पी' या 'पू' आदि अक्षरों आधार पर उसे 'प' अक्षर का विकल्प दिया हो तो माता–पिता द्वारा अपने जातक का नाम 'प्रवीण' रखने की एक सम्भावना होगी क्योंकि उनके अनुसार 'प्रवीण' नाम अक्षर 'प' से प्रारम्भ होता है। अब, कूट चक्र के अनुसार किसी जातक का नामाक्षर आधा तो नहीं है। यही प्रश्न आधे अक्षर से प्रारम्भ होने वाले अन्य नामों के साथ भी यथावत रहेगा। इस स्थिति में भी जातक की राशि मूल राशि से इतर होने के कारण अशुद्ध हो सकती है।

(ग) विवाह के समय वर–वधू के गुण मिलान के लिये विभिन्न पंचांगों में एक सरल गुण–मेलापक सारणी छपी होती है। इस सारणी से वर और वधू के जन्म के नक्षत्र–चरण देखकर एक नजर में ही गुण मिलान करके मिलने वाले गुण ज्ञात हो जाते हैं।

अब, यदि वर का बोलता नाम 'ऋतिक' और कन्या का बोलता नाम 'मोनिका' हो तो विवाह से पूर्व उनकी कुण्डली मिलान के समय उनके कितने गुण मिलते हुए मान्य होंगे?

एक सम्भावना के रूप में यदि कन्या के जन्म के समय समाधानकर्ता ने केवल सिंह राशि के आधार पर 'म' अक्षर बताकर कोई नाम रखने के लिये सुझाव दिया हो और माता पिता ने 'म' नाम से अपने अनुसार 'मोनिका' रखा हो तो इस बोलते नाम के अनुसार कन्या के जन्म नक्षत्र मघा (तीसरा और चौथा चरण) और पूर्व फाल्गुनी (पहला, दूसरा और तीसरा चरण) में से कोई एक सम्भव होगा। वहीं दूसरी और, वर के नाम का प्रथम नामाक्षर 'ऋ' कूट–अक्षर चक्र में है ही नहीं, अर्थात यहाँ भी माता पिता की इच्छा से ही रखा गया नाम होगा। अब यदि जन्म के समय बतायी गई 'तुला' राशि के अक्षर 'र' से उन्होंने रितिक के अनुरूप ऋतिक रखा हो या बिना समाधानकर्ता के सुझाये केवल अपनी इच्छा यह नाम रखा हो तो भी इस नाम के आधार पर दो जन्म नक्षत्रों– चित्रा और स्वाति के कुल पाँच चरणों (रा, री, रू, रे और रो के अनुसार चित्रा नक्षत्र के तीसरे वा चौथे चरण तथा स्वाति नक्षत्र का पहला, दूसरा व तीसरा चरण) पर विचार करके गुणों का मिलान किया जायेगा।

गुण मेलापक सारणी का अल्पांश [2]

कन्या ↓ वर →			तुला राशि				
			चित्रा–3	चित्रा–4	स्वाति–1	स्वाति–2	स्वाति–3
			रा	री	रू	रे	रो
सिंह राशि	मघा–1	मा	24.5	24.5	11.5	11.5	11.5
	मघा–2	मी	24.5	24.5	11.5	11.5	11.5
	मघा–3	मू	24.5	24.5	11.5	11.5	11.5
	मघा–4	मे	24.5	24.5	11.5	11.5	11.5
	पू॰ फा॰–1	मो	10.5	10.5	25.5	25.5	25.5

इन सभी सम्भावनाओं के आधार पर चार्ट से स्पष्ट है कि इन दोनों के गुणों की संख्या चार प्रकार की हो सकती है– 24.5 या 11.5 या 10.5 या 25.5। अब इनमें से दो सम्भावनायें (24.5 और 25.5) शुभ योग को और दो सम्भावनायें (10.5 और 11.5) अशुभ विवाह को प्रदर्शित करेंगी। तो बोलते नाम के आधार पर कैसे शुभ फल की मनोकामना पूर्ण होगी, इसमे संदेह की सम्भावना बनी ही रहेगी।

उपरोक्त चर्चा में कुछ लोगों के उस प्रश्न का समाधान होता हुआ दिखता है कि जब दोनों ही नाम जातक से सम्बन्धित हैं और दोनों ही अपने अपने स्थान पर जातक के लिये महत्वपूर्ण हैं, तो फिर प्रश्न समाधान के समय इनमें से कोई भी नाम प्रयुक्त करने में उसमें दोष कैसा। वास्तव में दोष होने या उसके अशुद्ध होने की प्रबल सम्भावना तो है। तो, प्रश्न यह होगा कि जब दोनों नाम अलग हैं तो फिर इनमें से किसी एक के दोष रहित होने की दशा में शुद्ध नाम ही सार्थक हो सकता है, दूसरा नहीं। दो अलग अलग नामों के आधार पर फलित एक समान नहीं हो सकता। किसी एक को तो हमें उन विशेष अवसरों पर त्यागना ही होगा। तो फिर कौन सा त्यागें, या फिर इसके अतिरिक्त कोई अन्य दोषरहित समाधान भी सम्भव है। आईये उसी का समाधान जानते हैं।

ज्योतिष में जातक के नाम के प्रयोग या उपयोग की सार्थकता

सामाजिक ढाँचे में व्यक्ति का नाम ही उसकी समाज में पहचान कराता है। जातक का बोलता नाम अर्थात प्रसिद्ध नाम भूमण्डल पर एक सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत महत्व रखता है। यदि दो व्यक्तियों के नाम समान हों तो उनके माता या पिता के वरीयता

क्रम के आधार पर तुलना करते हुए उस व्यक्ति की पहचान की स्पष्टता होती है। इस नाम का उपयोग व्यक्ति की सामाजिक पहचान, प्रतीष्ठा, लेन देन, कार्यव्यवहार और उसके अवागमन आदि से सीधे सम्बन्धित होता है।

जातक का बोलता नाम उसके जन्म नाम की भाँति उस व्यक्ति के जन्म के समय की खगोलीय स्थिति को तथा उस स्थिति के सापेक्ष गोचर में खगोलीय स्थिति में हुए परिवर्तन की कोई जानकारी न तो देता है और न ही दे सकता है। जातक का प्रसिद्ध–नाम एक जातक की सामाजिक पहचान मात्र है जबकि उसका जन्म–नाम उसके जन्म के समय आकाश में खगोलीय पिण्डों और नक्षत्रों की स्थिति का बोध कराता है। जन्म के समय पर घटित इसी खगोलीय स्थिति के आधार पर ही जातक का जीवन प्रभावित होगा, उसके जीवन में खगालीय पिण्डों की निश्चित गति के आधार पर निर्धारित पड़ाव उसे समयानुसार शुभ, अशुभ या सामान्य फल देंगे। इसलिये जातक का जन्म–नाम उसके जन्म–नक्षत्र से सीधे सम्बन्धित होने के कारण शुभ मुहूर्त जैसे सुअवसरों पर अति महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि दोनों एक ही हैं तो पूर्वोक्त कई त्रुटि या दोष तो स्वतः ही निरस्त हो जायेंगे।

इसलिये भूमण्डलीय स्तर पर जातक और उसके क्रिया कलापों की पहचान के लिये उसका बोलता नाम तथा भविष्य में उसके जीवन में होने वाले परिवर्तनों की जानकारी के लिये उसका जन्म नाम और उससे सम्बन्धित नक्षत्र व जन्म राशि की जानकारी महत्वपूर्ण होती है। दोनों ही नामों का अलग अलग महत्व है। इसलिये दोनों को एक दूसरे के पूरक के रूप में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता।

कौन सा नाम महत्वपूर्ण–एक समाधान

ऊपर के उदाहरणों का अवलोकन करते हुए, आईये, पहले हम विभिन्न कारणों से स्वेच्छा से या संस्कारकर्ता के दिशा निर्देशों के आधार पर इन दोनों नामों के निर्धारण के समय होने वाली त्रुटि से बचने के लिये एक बार फिर कूट चक्र को महत्व देते हैं।

जैसे कि कुछ क्षेत्रों में व्यक्ति के नाम आदि के स्थान पर कुछ अंकों के रूप में (जैसे कि 12 अंकीय आधार कार्ड संख्या) या अंको और अंग्रेजी के अक्षरों के मिश्रित क्रम के रूप में (जैसे स्थायी खाता संख्या या किसी परीक्षा का अनुक्रमांक आदि) एक प्रारूप का एक कूट ;ब्वकमद्ध के रूप में उस व्यक्ति की विशिष्ट पहचान स्थापित करने के लिये प्रयोग होता है, ठीक उसी प्रकार जातक के जन्म के समय रखा गया जन्म–नाम और उसमें भी विशेषतः नाम का प्रथम अक्षर उस जातक से सम्बन्धित एक विशेष कूट ;ब्वकमद्ध ही तो है। केवल इस कूट (केवल जन्म का नामाक्षर, न कि पूरा नाम) के बताने मात्र से ही ज्ञात हो जाता है कि जातक का जन्म नभ मण्डल के चन्द्र कान्ति वृत में स्थित अभिजीत नक्षत्र सहित कुल 28 नक्षत्रों में से कौन से नक्षत्र में और उसके किस चरण में हुआ है। इसी से उसकी जन्म राशि और राशि से जुड़े फलित भी स्वतः ज्ञात हो जाते हैं। तो फिर समाधानकर्ता को जातक के प्रश्न का समाधान करने के लिये उसका नाम पूछने की बजाय उसका जन्म नक्षत्र और उसका चरण पूछना चाहिये, वहीं दूसरी और जातक को भी अपने नाम के आधार पर नहीं बल्कि अपना जन्म नक्षत्र और उसका चरण बताकर ही अपने प्रश्न का समाधान कराना चाहिये। अर्थात, ज्योतिष में किसी शुभ अवसर पर प्रश्न समाधान के समय एक जातक के दोनों ही नामों में से कोई भी नाम महत्वपूर्ण नहीं होगा बल्कि उसके जन्म का नक्षत्र और उसके चरण की जानकारी ही पर्याप्त एवं आवश्यक होगी। यहाँ जातक के जन्म–नाम की तुलना में उसके जन्म नामाक्षर से ही पूर्णतः स्पष्टता होगी। अतः, आकाशीय काउंसिल के सन्दर्भ में प्रत्येक दशा में जातक के लिये उसके जन्म का नामाक्षर ही महत्वपूर्ण रहेगा न कि उसका कोई भी नाम। इसलिये एक व्यक्ति को अपना जन्म नामाक्षर सदैव स्मृत रखना चाहिये और किसी भी मुहूर्त या शुभ अवसर पर आवश्यक्ता के समय जन्म–नाम या बोलते–नाम के स्थान पर उसी जन्म नामाक्षर का प्रयोग करना चाहिये। क्योंकि जन्म नामाक्षर का सम्बन्ध सीधे नक्षत्र और उसके चार में से किसी एक चरण से है, इसलिये ज्योतिष विज्ञान में विश्वास बनाने के लिये एक शिक्षित और जागरूक व्यक्ति को ऐसे अवसरों पर अपने जन्म नाम के साथ अपना जन्म–नक्षत्र और उसका चरण सदैव स्मृत रखना चाहिये। कुछ लोग रखते भी हैं। स्पष्ट है कि यहाँ जातक का नाम महत्वपूर्ण तो कदापि नहीं है बल्कि कूट–चक्र के अनुसार उसके जन्म का शुद्ध नामाक्षर ही महत्वपूर्ण है। और, इसीलिये मेरा मानना यह है कि जातक का नाम चाहे कुछ हो, जातक को अपने जन्म समय का ''नामाक्षर'' या नक्षत्र व उसका चरण या दोनों अवश्य याद रहना चाहिये। केवल वही महत्वपूर्ण है। जन्म नामाक्षर ही वह कूट–अक्षर है जो जातक की राशि, नक्षत्र, उसके चरण और उनके आधार पर उनसे जुड़े फलित की प्रमुख जानकारी देता है जो उस जातक के जीवन से ही जुड़ी होंगी। अब जातक का नाम जो चाहे जो हो, कोई फर्क नहीं पड़ता। इसलिये जातक के दोनों में से किसी भी नाम के आधार पर फलित कहने की पद्यति पर अंकुश लगना चाहिये। इससे सामाजिक भ्रान्ति अधिक उत्पन्न होती है और समाधान कम जिसकी हानि ज्योतिष शास्त्र को उठानी पड़ती है। विज्ञान के आधार पर किसी समस्या के निवारण के लिये उस समस्या के प्रत्यक्ष आंकड़े ही महत्वपूर्ण होते हैं, उन्हें हम अपनी इच्छानुसार बदल कर या उनके स्थान पर एच्छिक एवं सुविधाजनक आंकड़े प्रयुक्त नहीं कर सकते अन्यथा परिणाम कुछ और ही प्राप्त होगा, तो उसी प्रकार ज्योतिष विज्ञान में हम अप्रत्यक्ष आंकड़ों के रूप में स्वैच्छिक जन्म–नाम या बोलते–नाम के आधार पर समस्या समाधान क्यों ढूँढने लगते हैं। ऐसा करके हम ज्योतिष विज्ञानी कहलाने के साथ साथ उसी विज्ञान के साथ अन्याय करते हैं। यदि गणित का प्रश्न हल करते समय प्रारम्भिक संख्या ही गलत चुनी जायेंगी तो उत्तर गलत ही होगा चाहे वहीं सूत्र और क्रियायें सही प्रयुक्त की गई हों।

मेरा मानना यह भी है कि व्यक्ति की सामाजिक पहचान के लिये यदि उस जन्म नामाक्षर से नाम रखना कठिन हो या सार्थक प्रतीत न होता हो या मनभावक न हो, तो उसकी ध्वनि से मेल खाते अक्षर से भी नाम रख सकते हैं, क्योंकि सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्ति का नाम भी तो अन्ततः एक कूट ही है, लेकिन यह केवल सामाजिक व्यवस्था में मान्य हो सकता है। प्रत्येक दशा में सर्वोपरि तो जातक का जन्म–नक्षत्र और उसका चरण और इनके लिये संक्षेप में ''कूट–अक्षर'' ही रहेगा।

अतः, पत्रिका विश्लेषण के समय किसी फलित के लिये या जातक से जुड़े किसी शुभ कार्य के मुहूर्त आदि की जानकारी के समय संस्कारकर्ता को जातक के बोलते नाम या जन्म नाम पूछने की बजाय जातक का जन्म–नामाक्षर ही पूछना चाहिये और जातक को भी अपना जन्म नामाक्षर ज्ञात न होने की दशा में अपने अनुसार बोलता नाम या अपनी सुविधानुसार रखा हुआ जन्म–नाम या मिलते जुलते अक्षर से बने जन्म–नाम के आधार पर सही निर्णय या फल पाने की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिये। एक जागरूक व्यक्ति को अपना जन्म–कूट अर्थात ''जन्माक्षर'' सदैव स्मरण रहना चाहिये और उसे ही प्राथमिकता के रूप में महत्व देना चाहिये। यहएक महत्वपूर्ण कदम ही ज्योतिष सम्बन्धी अनेक भ्रान्तियों के निवारण में निर्णायक सिद्ध होगा।

सन्दर्भ

1. श्री मार्तण्ड पंचागम्, सम्वत 2078– नक्षत्र राशिज्ञान चक्र– पृष्ठ 99
2. श्री आर्यभट्ट पंचांगम् – सम्वत 2075: वर–वधू गुण मेलापक सारणी– पृष्ठ 158
3. श्री मार्तण्ड पंचागम्, सम्वत 2078–मेलापक सारणी (भाग–2)– पृष्ठ 236